गलतियाँ हो गयी है। यह गलतियाँ अनदेखी नहीं की जा सकतीं। इसका एक उदाहरण देखिए --

``शहाजी-वंश की कीर्ति स्थापित करनेवाला कोई प्रतापी पुत्र... ।``

समर्थ - होगा - अवश्य होगा! चिंता की कोई बात नहीं! (जीजाबाई और शहाजी का घुटनों के बल पृथ्वी पर बैठना)

जीजाबाई - (अंचल फैलाकर) इसी आशीर्वाद की भिक्षा के लिए जीजाबाई भिखारण बनकर यहाँ आयी है महाराज!

समर्थ - (माला जीजाबाई के अंचल में डालकर) लो, जाओ तुम क्षत्रिणी हो, सिंहिनी हो, तुम्हारी कोख से शेर ही पैदा होगा!``[1]

उपर्युक्त संदर्भ में समर्थ रामदास के आर्शीर्वाद से छत्रपति शिवराय का जन्म चित्रित किया है, जो इतिहास सम्मत नही है। यहाँ कालक्रम दोष स्पष्ट दिखाई देता है।

ऐतिहासिक पात्रों के गलत नाम और गलत स्थान का आलोच्य नाटककारों ने चित्रण किया है। साथ ही शिवाजी राजा क्रोधि, असंयमी और देवी समर्थन प्राप्त योद्धा थे ऐसा चित्रण किया है। इस प्रकार का चित्रण इतिहास विरूद्ध है तथा इससे शिवराय के चरित्र की अपार हानि हो गयी है। वास्तव में छत्रपति शिवराय, बुद्धिमान, संयमी, चतुर और वीर योद्धा थे। इतिहास के गहरे अध्ययन के अभाव में नाटककारों ने गलत चित्रण किया है।

छत्रपति शिवराय सहिष्णु और नैतिकता का आदर्श थे। उन्होंने भोगी ओर विलासी जीवन को त्यागकर अविरत मेहनत का मार्ग अपनाया था। पर-स्त्री को भी अपनी माता, बहन माननेवाले वह शील संपन्न राजा थे। लेकिन कुछ नाटककारों ने उनको विलासप्रिय, रंगीला और प्रेमवीर के रूप में चित्रित किया है। नाटककार लाला बंशीधर लिखते हैं कि, राज्याभिषेक प्रसंग में रोशन आरा शिवाजी की पत्नी के रूप में वहाँ उपस्थित थी। वह लिखते है, ``शिवाजी का दरबार-ऐ-आम नजर आता है, तख्त पर दाहिनी ओर शिवाजी, बाई तरफ रोशन आरा बीच में संभाजी बैठा है, राजा लोग नजराने दे रहे हैं।``[2] वास्तव में शिवराय के राज्यभिषेक समारोह में उनकी धर्म पत्नी सोयराबाई उनके साथ सिंहासन पर विराजमान थी। इस संदर्भ में अनेक ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध हैं। नाटककार ने इतिहास के अध्ययन के अभाव में अत्यंत घटिया चित्रण किया है। अनेक मुस्लिम इतिहासकारों ने छत्रपति शिवराय की नैतिकता की प्रशंसा की है। फिर भी हिन्दी नाटककारों ने गलत चित्रण कर छत्रपति शिवाजी चरित्र का हनन किया है।

छत्रपति शिवाजी हिंदू धर्माभिमानी थे लेकिन उन्होंने कभी किसी भी धर्म का अनादर नहीं किया। धार्मिक कट्टरता उनमें नहीं थी वे सहिष्णु धार्मिक वृत्ति के

आदर्श राजा थे। हिन्दी के कई नाटककारों ने इतिहास के सही अध्ययन के अभाव में उनका कट्टर धार्मिक रूप में चित्रण किया है जो गलत और इतिहास विरूद्ध है।

छत्रपति शिवाजी श्रद्धालु थे लेकिन अंधश्रद्धावादी नहीं थे। वह अपनी माता-पिता और देवी तुलजाभवानी पर अटुट श्रद्धा रखते थे। अलोच्य नाटककारों ने शिवाजी की श्रद्धा को अंधश्रद्धा मानकर, कल्पना के आधार पर अदभुत और दैवी ढंग से चित्रण कर शिवराय के असाधारण कार्य का श्रेय देवता और रामदास को दिया है, जो इतिहास सम्मत न होकर गलत है। नाटककार स्वर्णसिंह वर्मा शिवराय का जन्म ही दैवी और अद्‌भुत रूप से चित्रित करते हैं।

``भवानी : वह इन्हीं बाघंबर बेशधारी शिवाजी के अंश से वीर योद्धा शिवाजी का अवतार होगा। (आवाज का होना, शिवाजी का प्रकट होना, देवी का तलवार देना।)``[3]

नाटककार ने उपर्युक्त संदर्भ में छत्रपति शिवराय का जन्म माता जीजाबाई की कोख से न होकर वह आकाश से प्रकट हुए और देवी ने उन्हें तलवार भेंट दी ऐसा चित्रण किया है। यह चित्रण इतिहासविरूद्ध है। यहाँ नाटककार की बुद्धिहीनता का परिचय मिलता है।

छत्रपति शिवराय के व्यक्तित्व में अनेक गुण थे। अपार बुद्धि, संगठन कौशल, परिश्रमशीलता, दूरदृष्टी, नैतिकता, स्वाभिमान, सहिष्णु, वीरता आदि गुणें के बलपर उन्होंने लोककल्याणकारी राज्य स्थापित किया। शिवराय ने स्व कर्तुत्व से असंभव लगनेवाला स्वराज्य निर्माण का कार्य संभव बनया। उनका राज्य जनता का राज्य था और वह खुद को जनता का सेवक मानते थे। वह स्वयंभू व्यक्तित्व के राजा थे। लेकिन नाटककारों ने शिवराय को एक परावलंबी और बुद्धिहीन रूप में चित्रित किया है। समर्थ रामदास की दैवी शक्ति के बल परही शिवराय को सफलता प्राप्त होती थी। समर्थ रामदास को शिवाजी के जन्म से लेकर अंतिम समय तक साथ रहने का चित्रण नाटककारों ने किया है। वास्तव में शिवराय और रामदास की प्रथम भेंट 1672 ई. में हुई थी और शिवराय की मृत्यु 1680 ईं. में हुई थी। 1672 ई.की उनकी भेंट के संदर्भ में ऐतिहासिक सबूत नहीं है. इस प्रकार के चित्रण से शिवराय के चरित्र की बहुत हानि हो गयी है और इससे शिवाजी राजा के माहन कार्य का श्रेयविभाजन हो गया है।

छत्रपति शिवराय ने अन्याय का विरोध कर लोकराज्य का निर्माण स्वकर्तृत्व से किया था। अन्यायी को उचित दंड देकर उन्होंने जनता को सुखी और संपन्न बनया था. देशप्रेम और जनकलयाण उनका मुख्य उद्देश्य था. अविरत मेहनत ओर पराक्रम से प्राप्त राज्य शिवराय ने किसी को दान नहीं किया था। फिर भी

नाटककारों ने शिवाजी राजा ने अपना राज्य ही गर्वहरण हेतु समर्थ रामदस को दान दिया ऐसा चित्रण किया है। नाटककार पातिराम भट्ट लिखते हैं।

``शिवाजी - मेरा राज्य! राज्य तो राजा का नहीं! वह होता है भगवान का। मैं केवल एक कर्मचारी हूँ। आप भगवान के प्रतिनिधी हैं, राजन राज्यशासन का भार आप पर है। इस तालपत्र में यही अनुरोध आपसे किया गया है। आप मुझको और सारे महाराष्ट्र को आश्रय दें।``[4]

उपर्युक्त प्रसंग के लिए कोई भी ऐतिहासिक प्रमाण उलब्ध नहीं है। इस प्रकार का मनचाहा चित्रण करना सामाजिक अपराध है। ऐसे चित्रण से शिवराय के चरित्र को अपमानित करने जैसा है।

निष्कर्ष छत्रपति शिवाजी का चरित्र अत्यंत आदर्श और श्रेष्ठ है। उनके चरित्र का इतिहास विरूद्ध चित्रण करने से समाज में अंधश्रद्धा बढ जाती है। उनको दैवी शक्ति प्राप्त थी यह मानने से उनके कार्य का श्रेय देवता को जाता है। शिवराय ने अंधश्रद्धा नष्ट करने के लिए कडी मेहनत की। आज के कुछ साहित्यकार उनके चरित्र का चित्रण करते समय इतिहास भूल जाते हैं, शिवराय का कार्य भूल जाते हैं और मनचाहा चित्रण करते हैं। ऐतिहासिक तथ्य को ठुकराकर लिखे साहित्य से ऐतिहासिक चरित्र की हानि होती है। इसलिए ऐतिहासिक ललित साहित्य लिखते समय साहित्यकार को इतिहास का गहरा अध्ययन करना आवश्यक है, ऐतिहासिक नाटक लिखते समय नाटककार ने इतिहास को अधिक और कल्पना को कम महत्व देना आवश्यक है। जिससे आज का समाज ऐतिहासिक महापुरूषों की आदर्श प्रेरणा ग्रहण कर सके।

संदर्भ सूची :

1. वेणिराम त्रिपाठी - छत्रपति शिवाजी, पृ. 6- 7.
2. लाला बंशीधर - वीर शिवाजी, पृ. 82
3. स्वर्णसिंह वर्मा - छत्रपति शिवाजी, पृ 4.
4. पतिराम भट्ट - छत्रपति शिवाजी, पृ 50-51.

☆☆☆